वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा की प्रसांगिकता

सरताज सिंह
एम.ए. प्रथम वर्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़

शोध पत्र का सार

आज वर्तमान समय में पूरा विश्व वैश्वीकरण के कारण एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण के युग में जहां वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का प्रचार व प्रसार हो रहा है वहीं हिंदी भाषा की भी वर्तमान समय में प्रासंगिकता बनी हुई है क्योंकि भारत विश्व में एक विशाल जनसंख्या वाला देश है और यहाँ की अधिकतर जनता हिंदी भाषा का इस्तेमाल करती है। भले ही आज वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव है। परन्तु हिंदी भाषा का भी विश्व में अपना महत्व है। आज हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी वैश्विक स्तर के सम्मेलनों मे जाते हैं तो वे अपनी बात हिंदी भाषा में रखते हैं। चाहे वह अमेरिका में गये हो या चीन में वे अपनी बात हमेशा हिंदी भाषा में ही रखते हैं। जोकि हिंदी भाषा के लिए गर्व की बात है कि उसका वैश्विक स्तर पर प्रचार व प्रसार हो रहा है इसके साथ ही आज वैश्वीकरण के युग में जिस तरह से भारत आत्मनिर्भर बनने की और अग्रसर है इससे भविष्य में उम्मीद की जा रही है। हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर प्रचार व प्रसार होगा। इसलिए वैश्वीकरण के युग में वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का प्रचार व प्रसार भारत के लिए बड़े गर्व की बात है। इससे आने वाले समय में उम्मीद है कि हिंदी भाषा का विश्व में अपना एक विशेष स्थान होगा।

Kewords: वैश्वीकरण, वैश्विक हिंदी प्रसार, राजनीति, सरकारी सहयोग, मीडिया।

भाषा वह साधन है जो अपने जज्बात, अपनी भावनाएं अपने सपने, अपनी नीतियां, अपने फैसले, अपनी सृजनात्मकता, अपने ज्ञान, नियम व संभावनाएं, अपनी जरूरतें, अपनी इच्छाएं, अपनी जिंदगी के कुछ अनकहे, अनछुए पहलू इन सब को समेट कर या तो सबके सामने लिखित रूप में प्रकट कर दी जाती है या मौखिक रूप में जिनमें से कुछ मूक भाषा की परिधि में भी आते हैं जैसे आंखों की भाषा, इशारों की भाषा, इन सबको शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन कार्य है। (इनमें से कुछ ऐसा भी लिखित हो सकता है जो सदा के लिए कुछ डायरी के पन्नों में ही दफन हो जाते हैं जिसे एकांत में स्वयं के ही दिल को बहलाने का कार्य करते हैं।) इसके बाद भाषा का औपचारिक लिखित रूप प्राप्त होता है जिससे साहित्य का निर्माण होता है जो विषय विविधता पर आधारित होकर हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेज कर रखता है तथा आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित स्थानांतरित करता है। समय के साथ-साथ इसमें और अधिक विस्तार होता जाता है तथा यह आवश्यक भी है क्योंकि परिवर्तन और परिवर्द्धन प्रकृति का नियम है। हमारी हिंदी भविष्य की भाषा है क्योंकि विश्व के डेढ सौ से अधिक देशों में दो करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीयों का बोलबाला है तथा अधिकार प्रवासी भारतीय आर्थिक रूप से संपन्न है। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए प्रवासी भारतीय एवं प्रवासी हिंदी साहित्य का बहुत बड़ार हाथ है। 1999 में मिशन ट्रांसलेशन शिखर बैठक में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होजुमी तनाका ने जो भाषण दिए थे उनके अनुसार विश्व में चीनी भाषाई आंकड़े प्रस्तुत किये थे उनमें चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय तथा अंग्रेजी को तृतीय स्थान प्राप्त है, क्योंकि हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं है। हिंदी है प्रत्येक हिंदुस्तान का गर्व, हिंदी है प्रत्येक हिंदुस्तानी की पहचान। इसलिए हिंदी भाषा वैश्वीकरण के युग में अपनी एक अलग पहचान बनाने की और अग्रसर है।

1. वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा व भविष्य में हिंदी भाषा का विस्तार :

वास्तव में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति व भारतीय सहित्य जितना अधिक प्रचारित-प्रसारित है। यह जितना वृहद्, अनूठा व विविध है उतना किसी और देश का संभव हो ही नहीं सकता। हमारे भारतीय साहित्य में जितने वेद, पुराण, श्रुतियां,

स्मृतियां, महाकाव्य आदि की उपलब्धता है वह किसी अन्य सभ्यता के पास हो, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अभी हमने सिर्फ साहित्य की बात इसलिए की है क्योंकि साहित्य की वैश्विक स्तर पर उपलब्धता प्राप्त करने का एक महान सेतू बनी है ''हिंदी'' क्योंकि इसी साहित्य को आम पाठक वृंद की पहुच एवं समझ तक सरलता से बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। वैसे हिंदी साहित्य में भी ना तो ग्रंथों की कमी है और ना ही विविधता की। प्रत्येक विषय पर (जैसे राजनीति, अर्थ, काम आदि पर) प्रत्येक रस पर (जैसे वीर श्रृंगार, वात्सल्य आदि पर) प्रत्येक विधा पर (जैसे दोहा, सोरठा, कविता, कहानी नाटक, एकांकी आदि) पर प्रत्येक भाव पक्ष पर या भावना पर (जैसे वीरता, भक्ति, प्रेम, आदि) पर प्रत्येक भाव पक्ष पर या भावना पर (जैसे वीरता, भक्ति, प्रेम आदि) पर प्रचुर मात्रा में साहित्य, पूर्ण प्रामाणिकता के साथ उपलब्ध है। हिंदी साहित्य के इतिहास का वर्गीकरण ही इन्हीं भाव पक्षों की प्रधानता के लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा किया गया है जैसे वीरगाथाकाल, रीतिकाल, भक्तिकाल आदि। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी भाषा में ज्ञान है, प्रेम है, करुणा है, मित्रता है, भावाभिव्यक्ति की चरम सीमा है, काव्य सौष्ठव है, छंद अलंकार के साथ सौंदर्यात्मकता हैं, और इन सबके साथ-साथ है हिंदी भाषा का जो सबसे महत्वपूर्ण गुण और वह है इसकी सरलता ओर आसानी से उपलब्धता। क्योंकि भाषा संबंधी यह गुण तो अन्य भाषाओं में भी हैं परंतु और वे भाषाएं भी सरल कही जा सकती हैं। परंतु हिंदी जितनी नहीं, क्योंकि भारत में प्रत्येक राज्य में हिंदी बोलने वालों की एक विशेष जनसंख्या उपलब्ध है और उत्तर भारत जैसे हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश को लगभग पूर्णतया ही हिंदी भाषी क्षेत्र है। इसलिए हिंदी की महत्ता में और इजाफा हो जाता है। इसकी अखंडता और प्रगाढ़ तब हो जाती है जब हिंदी की सरलता के साथ-साथ हिंदी की आसान पहुंच, उपलब्धता भी जुड़ जाती है। इसलिए वैश्वीकरण के युग में आज हिंदी भाषा का वर्चस्व कायम है।

2. वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का विकास :

आज भारत में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं। इसका आशय यही है कि पढ़ा-लिखा वर्ग भी हिन्दी के महत्व को समझ रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। आज मॉरीशस में हिंदी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुए है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडिया के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ़ होकर विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई-मेल, ई-कामर्स, ई-बुक, इंटरनेट, एस.एम.एस. एवं वेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं। माइक्रोसाफ्ट, गूगल, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही है। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसरी है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएं निकल रहीं हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्व मन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं।

3. वैश्विक स्तर पर राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में हिंदी भाषा :

जहाँ तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विनिमय के क्षेत्र में हिंदी के अनुप्रयोग का सवाल है तो यह देखने में आया है कि हमारे देश के नेताओं ने समय-समय पर अंर्तराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया है। यदि अटल बिहारी वाजपेयी तथा पी.वी नरसिंहराव, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में दिया गया वक्तव्य स्मरणीय है, तो श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राष्ट्र मंडल देशों की बैठक तथा चन्द्रशेखर द्वारा दक्षेस शिखर सम्मेलन के अवसर पर हिंदी में दिए गए भाषण भी उल्लेखनीय है। यह भी सर्वविदित है कि यूनेस्को के बहुत सारे कार्य हिंदी में सम्पन्न होते हैं। हिंदी को वैश्विक संदर्भ और ख्याति प्रदान करने में

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा विदेशों में स्थापित भारतीय विद्यापीठों की केन्द्रिय भूमिका रही है जो विश्व के अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रों में फैली हुई है। इन विश्वविद्यालयों में शोध स्तर पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की सुविधा है जिसका सर्वाधिक लाभ मिल रहा है।

4. हिंदी भाषा का वैश्वीकरण करने के लिए सरकार का सहयोग :

हिंदी प्रवासी साहित्य के द्वारा वैश्वीकरण को प्राप्त करने हेतु सरकारी सहयोग अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोई भी कार्य सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। वर्तमान मोदी सरकार हिंदी भाषा में न केवल स्वयं कार्य कर रही है अपितु ऐसा करने की प्रेरणा भी दे रही है। स्वर्गीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज जी द्वारा यू एन (यूनाइटेड नेशनस) में दिया गया हिंदी में भाषण और हाल ही में यू.एन. में प्रस्तावित हिंदी भाषा के लिए चार करोड़ रुपए का बजट हिंदी भाषा के उत्थान के लिए मील का पत्थर है। हिंदी गुण और परिमाण में समृद्ध भाषा है। आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे हैं उतने बहुत सारी भाषाओं के बोलने वाले भी नहीं हैं। केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दो सौ से अधिक हिंदी साहित्यकार सक्रिय हैं जिनकी पुस्तकें छप चुकी हैं। यदि अमेरिका से ''विश्वा'', हिंदी जगत तथा श्रेष्ठतम वैज्ञानिक पत्रिका ''विज्ञान प्रकाश'' हिंदी की दीप शिखा को जलाए हुए हैं तो मॉरीशस से विश्व हिंदी समाचार, सौरभ, वसंत जैसी पत्रिकाएं हिंदी के सार्वभौम विस्तार को प्रामाणिकता प्रदान कर रही हैं। संयुक्त अरब इमारात से वेब पर प्रकाशित होने वाले हिंदी पत्रिकाएं अभिव्यक्ति और अनुभूति पिछले ग्यारह से भी अधिक वर्षों से लोकमानस को तृप्त कर रही हैं और दिन प्रतिदिन इनके पाठकों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

5. मीडिया और इन्टरनेट पर हिंदी भाषा :

यह पूर्ण रूप से सत्य है कि हिंदी में अंग्रजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं हैं। उसमें ज्ञान विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। अभी हाल ही में महात्मा गांधी अंर्तराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इसी तरह ''इकोनामिक टाइम्स'' तथा ''बिजनेस स्टैंडर्ड'' जैसे अखबार हिंदी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखनें में आया कि ''स्टार न्यूज'' जैसे चैनल भी अंगेजी से आरंभ हुए थे वे विशुद्ध बाजरीय दबाव के चलते पूर्णत: हिंदी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही ''स्टार स्पोर्ट्स' (जैसे खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी की वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार-माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है।

6. हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर लाने में चुनौतियां :

आज के युग में वैश्विकरण हर स्तर पर आवश्यक है। मानव संवेदनशील प्राणी है और साहित्य एक ऐसा साधन है जो मानवीय संवेदना को पठन-पाठन, श्रवण एवं लेखन के द्वारा आलंबन प्रदान करता है। इस पर भी हिंदी साहित्य की तो बात ही कुछ ओर है। इसकी अनेक विधाएं जैसे कहानी, आलेख, संस्मरण, नाटक, रिपोतार्ज, एकांकी आदि सबकी अपनी विशिष्टाएं हैं। हिंदी साहित्य में विभिन्न रस (जैसे करुण, रौद्र, वात्सल्य, वीर आदि) अलंकार (जैसे अनुप्रास, भ्रांति, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, उपमा आदि) छंद (जैसे वर्णिक छंद, मात्रिक छंद, दोहा, सोरठा, चौपाई आदि) इन सबकी इतनी विविधता है, इतना सौंदर्य है, इतना आनन्द है, कि मानव अपने आप को भूल जाता है, वो अपनी भावनाओं के साथ कहीं दूर कल्पनाओं के संसार में ही चला जाता है। परंतु आज का वर्तमान युग यांत्रिक अधिक होता जा रहा है। मानवीय संवेदनाएं जैसे स्पर्श बातचीत, रिश्ते, एहसास, भावनाएं सिमटती जा रही हैं। इन सबको देखते हुए हिंदी के द्वारा इन्हें पुन: जीवित करना, नु: इन सबको सशक्त करना, एक कठिन कार्य है। परंतु यह असंभव नहीं। आज जबकि हर जगह नई तकनीक का ही बोल बाला है एवं कुछ समय पहले तक केवल अंग्रेजी में ही सब प्रकार के तकनीकी कार्य होते थे। परंतु आज आधुनिकता के साथ-साथ हिंदी ने भी कोमलता और सौम्यता के साथ अपना स्थान लेना आरंभ कर दिया है। कंप्यूटर, मोबाइल फोन में भी हिंदी टाइपिंग, गूगल हिंदी आदि ऐप्स प्रस्तुत है जो हिंदी को वर्तमान की भाषा बनाते हैं। आज हिंदी प्रेमी युवा भी हिंदी में न

केवल संदेश भेजते हैं अपितु हिंदी में ही मोबाइल पर भी कार्य भी करते हैं। वैश्वीकरण का पर्याय में आने जाने वाले गूगल पर हिंदी उपस्थित है। यानी वैश्वीकरण प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। आज हिन्दी में भी वह तमाम सामग्री, लगभग सभी विषयों से संबंधित साहित्य सब कुछ हिंदी भाषा में भी उपलब्ध है। यह वैश्वीकरण की ओर एक सशक्त सार्थक कदम है।

7. हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर वैश्वीकरण :

हिंदी भाषा का वैश्वीकरण हर स्तर पर प्राप्त करना अत्यावश्यक है। हमारी हिंदी चाहे वे प्रवासी हो या अप्रवासी, हिंदी केवल हिंदी है। यह अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हो सकती है क्योंकि वैश्वीकरण को भावनात्मक स्तर पर जागरूक करना आज प्रत्येक हिंदुस्तानी का लक्ष्य होना चाहिए। हिंदी के लिए हमारे विचार, हमारी संवेदनाएं, हमारी निष्ठा, हमारी पंरपराएं, हमारे रीति-रिवाज, हमारी संस्कृति, हमारी विरासत हमार धर्म, हमारी नैतिकता, हमारी सामाजिकता, हमारी भावनाएं, हमारी राष्ट्र भक्ति आदि सब कुछ हिंदी से जुड़ी है। हिंदी निरंतर ही प्रगतिशील रही है। वैश्वीकरण को प्राप्त करने के लिए हिंदी अत्यावश्यक है। प्रवासी स्तर पर भी हिंदी की यही भूमिका है। यह इन सभी संप्रत्यों का प्रचार-प्रसार हर स्तर पर करती रही है, और आगे भी करती रहेगी। अब आवश्यकता है हिंदी को अत्याधिक प्रचारित-प्रसारित, पुष्पित-पल्लवित करने की ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी हिंदी को गर्व के साथ अपना सकें। इसके लिए सभी को छोटे से छोटे स्तर पर भी सार्थक सहयोग प्रदान करना होगा। इसी के साथ-साथ राजनीतिक आश्रय भी आवश्यक है, तभी हम वैश्विकरण की इस चुनौती को स्वीकार कर सकेंगे तथा अपना लक्ष्य हासिल कर सकेंगे।

निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हिंदी को अत्याधिक कार्य करना होगा। प्रवासी हिंदी साहित्य, हिन्दी साहित्य एंव हम हिंदुस्तानियों को मिलकर हिंदी के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध रहना होगा जिस प्रकार विदेशों में हिंदी को सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है, हिंदुस्तान में भी हिंदी को उतना ही सम्मान मिले, जितने सम्मान की वह हकदार है। आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी पाठय सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएं। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्व बोध को गहराइयों तक महसूस करेंगे और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित होंगे। आज समय की मांग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमाम निकषों एवं प्रतिमानों पर कहे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें। क्योंकि ''भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, यह अपने देश को संस्कृति की आत्मा होती है'' इसलिए हम सब भारतवासी साहित्य (चाहे वह प्रवासी हो या अप्रवासी) से संबंधित वैश्वीकरण की चुनौती को सहर्ष स्वीकार करें एवं अपने यथासंभव सार्थक प्रयत्नों के द्वारा उसे सफलता तक पहुंचाने का प्रयास करें। अपनी मातृभूमि के प्रति, अपनी मातृभाषा के प्रति, हिंदी के प्रति, यही हमारी सच्ची निष्ठा का परिचायक होगा।

संदर्भ :

1. मोहम्मद इरफान मलिक, आलेख, देश हरियाणा वेबसाइट, फरवरी 2019, ''हिंदी भाषा चुनौतियां व समाधान'' http://desharyana.in/archives/9872
2. अमित कुमार विश्वास, आलेख, हिंदी समय जर्नल, ''वैश्वीकरण और हिंदी की चुनौतियां'' http://www.hindisamay.com/content/10793/1/1/लेखक-अमित कुमार विश्वास की लेख वैश्वीकरण और हिंदी की चुनौतियां.cspx
3. डॉ. विमलेश शर्मा, आलेख, अपनी माटी साहित्य पत्रिका, दिसम्बर 2013, ''वैश्वीकरण और हिंदी : प्रसार व प्रवाह'' http://www/apnimaati.com/2013/12blog-post2233.html
4. प्रो. नरेश मिश्र, आलेख, राजभाषा भारती पत्रिका, मार्च 2018, ''भारतीय संस्कृति की संवाहिका है हिंदी'' http://rajbhasha.gov.in/sites/defult/files/rb154.pdf
5. गंगानन्द झा, आलेख, प्रवक्ता वेबसाइट, ''हिंदी की प्रसंगिकता'', http://www.pravakta.com/hindi-ki-

prasangigta/

6. केशव मोहन पांडे, आलेख, संवादरंग वेबसाइट, जनवरी 2017, ''समय के साथ कदम मिलाती हिंदी'', http://samvadrang.com/समय-के-साथ-कदम मिलाती-हिंद/

7. बच्चूप्रसाद सिंह, आलेख, भारतीय डिसकवरी वेबसाइट, ''हिंदी का अंतराष्ट्रीय परिपेक्ष्य'' http://m.bharatdiscovery.org/india/हिंदी का अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य - बच्चूप्रसाद सिंह

8. प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद, आलेख, भारतीय डिस्कवरी वेबसाइट, ''अंतराष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी'' http://m.bharatdiscovery.org/india/अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ मं हिंदी - प्रा. सिद्धेश्वर प्रसाद

ISBN: 978-81-954645-0-0